Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-116-120

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 116-120
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

1. सोनू कुमार
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर
बिहार, विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

2. प्रो. (डॉ.) त्रिविक्रम नारायण सिंह
शोध निर्देशक,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर
बिहार, विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

Corresponding Author :

सोनू कुमार
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर
बिहार, विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर.

डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय के काव्य में मिथकीय चेतना

डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय प्रकृति के प्रति बेहद संवेदनशील और अपने समय की शिनाख्त करने वाले कवि एवं गीतकार हैं। उनकी रचनाओं में अर्थगर्भत्व के साथ लोच है, लय है, लावण्य है और पाठक से सम्बद्ध होने का सम्मोहन भी।

डॉ. उपाध्याय नैसर्गिक कवि हैं। वे प्रसिद्धि, पुरस्कार और प्रभाव के लिए जबरन कविता नहीं लिखते हैं। उन्हें जब इल्हाम होता है, तभी उनकी सरस्वती सृजनशील हो पाती है। अब तक उनके 3 कविता-संग्रह :- (1) 'बीज हूँ मैं', (2) 'धूप लिखेंगे छाव लिखेंगे' और (3) 'देखा है उन्हें' प्रकाशित हैं। इस लिहाज से इन्होंने भले ही कम लिखा है, मगर जो लिखा है, वह सार्थक और कलात्मक है। उपाध्याय जी के काव्यात्मक व्यक्तित्व के पर्यालोचन से प्रतीत होता है कि उनमें नेपाली और बच्चन की गीतात्मक उपलब्धि का सुजोग घटित हुआ है। वहीं दूसरी ओर उनमें जानकीवल्लभ शास्त्री की कलात्मकता एवं नागार्जुन आदि की जनपक्षधरता भी परिलक्षित होती है। ऐसा इसलिए भी संभव हुआ प्रतीत होता है कि रवीन्द्र उपाध्याय संवेदना के धनी, अनुभव से परिपक्व और रचनाधर्मिता के स्तर पर प्रतिभावान कवि एवं गीतकार हैं। इसी मेधा शक्ति एवं अध्ययनशीलता के कारण उनकी अनेक कविताएँ मिथकीय चेतना से आपूरित हैं।

मिथक लोक मानस एवं आस्था के अटूट विश्वाश तथा निष्ठा के साक्ष्य होते हैं। ये समाज में व्याप्त धार्मिक, राजनीतिक, नैतिक आदि समस्त मानवीय अवधारणाओं के आवरण पर हो रहे अमानवीय व्यवहारों कुरीतियों की वास्तविकता को आम जन तक संप्रेषित करते हैं एवं उसे सचेत करते हैं । फ्रांसीसी समाज शास्त्री दुर्खीम के मतानुसार मिथक का सम्बन्ध प्रकृति से न होकर समाज से है, जबकि मलिनोवस्की का कहना है " मिथक न प्रकृति के प्रति चमत्कारिक प्रक्रिया है, न विगत का आलेख उसका प्रयोग सामाजिक व्यवस्था का संरक्षण एवं संचालन करने के लिए होता है।"[1] कवि रवीन्द्र

उपाध्याय की कविताएँ भी पाठकों को आनंद रस में सरावोर करते हुए, ऐतिहासिक – पौराणिक दृष्टिकोणों से जोड़ते हुए जीवन घटित घटनाओं की सच्चाई को बखूबी प्रदर्शित करती हैं। वीरेन्द्र आस्तिक लिखते हैं – " वे मुखौटाधारी सभ्यता का पर्दाफाश करते हैं।"[2] वहीं डॉ. शेखर शंकर मिश्र लिखते हैं – " बहुत कुछ बिखरे हुए को सहेजती रवीन्द्र उपाध्याय की कविताएँ कठिन और घोर तनावग्रस्त समय में जीवन के प्रति विश्वास जगाती है।"[3]

वर्तमान समय जटिल समस्याओं से घिरा हुआ, विरोधाभाओं का समय है। इसमें कविता सपाटबयानी करती हुई, गद्यमय बनकर रह गई है। ऐसे समय में रवीन्द्र उपाध्याय की गीत – गजल और कविताओं में लय तत्व के साथ – साथ अर्थ तत्त्व का भी गहन समावेश हुआ है, जिसमें मिथक का महत्पूर्ण योग है। उनकी काव्य रचनाओं में प्रचलित मिथक हैं – रावण, शूर्पनखा, सीता, मर्यादापुरुषोत्तम राम, दुर्योधन, श्री कृष्ण, शकुनि, कामदेव, इंद्र, कालिदास, यक्ष, पिचाश, विश्वामित्र, त्रिशंकु, गुरु द्रोण, विदूर आदि। अर्थात् दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय की काव्य रचनाओं में भारतीय काव्यशास्त्र द्वारा निर्धारित मिथकों का सफल प्रयोग मिलता है। 'अंतर्गत रीता का रीता' शीर्षक गीत में वे लिखते हैं -

" सब हांक रहे अपनी – अपनी
हँस रही सूप को है चलनी
रावन भी जपता 'राम – राम'
औ शूर्पनखा ' सीता – सीता'
हक मांगों तो अज्ञातवास
सच कहा बँधोगे नाग – फाँस
है चकित पार्थ, भौचक केशव
दुर्योधन बाँच रहा गीता ।"[4]

इन पंक्तियों के द्वारा कवि अपने समय की विद्रूपताओं एवं बिडम्बनाओं को बहुत ही मार्मिक तथा व्यंग्यात्मक अंदाज में प्रस्तुत किया है। कवि कहता है कि त्रेता युग के राम और रावण, सीता और शूर्पनखा के बीच तथा कृष्ण और दुर्योधन के बीच की शत्रुता और पृथकता स्पष्ट रूप से झलकती थी। उस समय का रावण राम को तुक्छ और वनवासी कहता था तथा शूर्पनखा सीता को दुष्टा शब्द से संबोधित करते हुए उनके प्रति अपनी घृणा और दुश्मनी दिखलाती है। उस समय का रावण यह मानता था कि शत्रु के साथ ऐसा नहीं करना चाहिए कि ऊपर से हित के समान और भीतर से शत्रु का शुभचिंतक हो, इससे तो क्रोधी सांप की तरह रहना अच्छा है। किन्तु वर्तमान समय तो बड़ा छलिया है। आज का रावण भी राम – राम बोलने लगा है और शूर्पनखा भी सीता – सीता जपने लगी है, तो वहीं अन्याय का प्रतीक दुर्योधन भी गीता का ज्ञान देने लगा है। ऐसी स्थिति में मुखौटाधारी दुष्टों की पहचान कर पाना बहुत मुश्किल हो गया है। मुक्तिबोध की भाषा में कहें तो ये सब के सब दुभाषीय हैं। इन विषम परिस्थतियों को व्यक्त करने के लिए कवि ने रावण, शूर्पनखा, राम, सीता, श्रीकृष्ण, अर्जुन, दुर्योधन जैसे मिथकीय पात्रों का सार्थक प्रयोग किया है। डॉ. पूनम सिंह लिखती हैं – " रवीन्द्र पारदर्शी सवेदनाओं के गीतकार हैं। कहीं भी उनमें प्राणहीन यांत्रिकता का प्रभाव नहीं दिखता है। देशकाल की दिशाएँ, दशाएँ प्रभाव और अन्विति उनमें समाहित हैं।"[5] 'हाशिये हैं' शीर्षक कविता में वे लिखते हैं–

"आज भी जेता शकुनि है
युधिष्ठिर हारा किये हैं।" [6]

यहाँ कवि समाज के वास्तविक स्वरुप से पाठक वर्ग को परिचय कराता है। इन पंक्तियों के द्वारा समस्त समाज की सम्रग विसंगतियों को 'शकुनि' और 'युधिष्ठिर' जैसे पौराणिक मिथकीय पात्रों द्वारा दिखाया गया है। कवि यह बताता है कि महाभारत का सच आज भी जारी है, 'शकुनि' जैसे लोग छल – कपट एवं दुष्कृत्यों में शामिल लोग आज भी जीत रहे हैं और 'युधिष्ठिर' जैसे धर्मपथी लोग आज भी हार का सामना कर रहे हैं। 'बादल की महफ़िल' कविता में मिथकीय प्रयोग का कैनवास, सामजिक यथार्थ के पक्ष में और ज्यादा तन जाता है -

" बैठकी का नहीं, यह

रिमझिम बरसने का समय है
मौज करना मुक्त नभ में
दिन कृषकों पर अनय है
स्वर्ग स्वामी बदलते अब
क्यों नहीं ये दूत काहिल ?"[7]

इन पंक्तियों में कवि ने स्वर्ग स्वामी यानी बादलों के शासक इंद्र के मिथकीय प्रयोग द्वारा सामाजिक ढाँचे एवं प्रशासनिक व्यवस्था का पोल खोल कर रख दिया है। इतना ही नहीं वे नवीनता की आगाज के साथ आलसीदूत, कामचोर, काहिल अधिकारी को बदलने की मांग भी करते हैं। यहाँ मिथक के साथ – साथ व्यंग्य का भी सुन्दर सटीक, ललित, मर्मस्पर्शी एवं बहुव्यंजक प्रयोग हुआ है। बादल भैया शीर्षक कविता में यह प्रयोग और भी ज्यादा व्यंजित हो रहा है -

"कालिदास के यक्ष नहीं पर शापग्रस्त हैं
प्रिया पीर से नहीं भूख से विकल- त्रस्त हैं।"[8]

यहाँ कवि ने कालिदास के यक्ष और उसकी प्रिया का जिक्र किया है। इनके माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि अब कालिदास के यक्ष 'प्रिया वियोग' में पीड़ित नहीं, किसान पीड़ित हैं। उन्हें विरह वेदना है - बादल के नहीं बरसने की और किसान के हित में काम कर रहे प्रशासनिक तंत्र के विफलता की। यक्ष और यक्ष – प्रिया दोनों मिथकीय पात्र हैं। 'फकत बीज नहीं' शीर्षक कविता में कवि ने समकालीन सामाजिक व्यवस्था की क्रूर विडम्बनाओं का जबरदस्त पर्दाफांश किया है -

"चातकी के समर्पण - भाव से नहीं
चटखे मन, प्रश्नाकूल आँखों से ।"[9]

यहाँ चातकी एक पक्षी का नाम है, जो समर्पण – भाव के लिए जानी जाती है। इसके द्वारा कवि ने सामाजिक – राजनीति, घात – प्रतिघात की पीड़ा से अविकल आत्मा और शशंकित आँखों की भावद्रष्टा को दिखाया है। 'स्वर्ग स्वामी' कविता तो पूरी तरह मिथक से ही परिपूर्ण हुई है। उदाहरणार्थ –

" घिरा है जब भी
संकटों में स्वर्ग

धरती तनी है
कोई पुरुरवा, कोई दशरथ
आगे बढ़ा है

जब भी
किसी तपोनिष्ठ पृथ्वी पुत्र ने
छूना चाहा है साधना- शिखर
लहरे कर्म – केतन
टूटे बैर व्यूह ।"[10]

इन पंक्तियों में कवि ने इंद्र के लालची एवं धोखाधड़ी भरे स्वभाव की तुलना वर्तमान समय के सत्तारूढ़ नेतागण से की है। कवि कहना चाहता है कि जो हाल देवताओं के राजा इंद्र का था, वही हाल आज के प्रशासक-शासक की है। उनकी उतनी ओछी राजनीति और ओछा व्यवहार है, जितनी ओछी राजनीति इंद्र की तथा जितना उसका ओछा व्यवहार। जब - जब कोई धरती पुत्र खुद को खोजने के लिए गहरे तप में लगता है, तब – तब इंद्र शंकाओं और भय से भर जाता है कहीं इसके ताप का लक्ष स्वर्ग का सिंहासन न हो। फिर क्या, वह साम, दाम,दंड,भेद की नीति अपनाकर, हर प्रकार से ऋषि – मुनि की तपस्या भंग करने में लग जाता है। आज के प्रशासक-शासक ठीक इंद्र के जैसे ही हैं या उनसे एक – दो कदम आगे ही निकल गए हैं। सत्ता पाकर वे आम लोगों के कष्टों को भूला जाते हैं और सत्ता के मद में इंद्र की तरह मदहोश हो जाते हैं तथा सूरा के साथ सुन्दरी की तलाश में लग जाते हैं। यह आज के प्रशासक-शासक की सबसे बड़ी क्रूर विडम्बना है, जो देवराज इंद्र की थी। इसके लिए वे किसी हद तक जा सकते हैं या उलटी गंगा भी भा सकते हैं। साथ ही वे जानते हैं कि जनता तो बड़ी भोली – भाली है। इसी का फायदा उठाकर चुनाव के समय उनके शरणागत हो जाते हैं तथा उस समय उनके सामने दया के पात्र बन जाते हैं। पुनः मठाधीश बनकर तमाम कुकृत्यों में लिप्त हो जाते हैं। यहाँ नेता और प्रशासन के दोहरे चरित्र को उजागर करने में 'स्वर्ग

स्वामी' मिथक का अत्यंत सार्थक एवं व्यंजनापूर्ण प्रयोग हुआ है। 'डर' शीर्षक कविता में भी मिथक का सार्थक संयोजन दिखता है -

"अंधेरी रात में निर्जन राह का ठूंठ
बन जाता है पिशाच
ठोंकता है ताल !
पावों को छूटने लगता है पसीना
बहुत बूरा हाल ।"[11]

प्रस्तुत पंक्तियों में प्रयुक्त पिशाच शब्द मिथकीय पात्र है। इसके द्वारा कवि यह बताना चाहता है कि पिशाच रूपी अज्ञात भय से लोग डर जाते हैं एवं वेबजह परेशान हो जाते हैं। इसका प्रस्फुटन आंतरिक एवं बाह्य दोनों स्तर पर होता है जबकि पिशाच का यथार्थ से दूर – दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। यह मात्र एक छलावा है, जो लोगों को दम घुटने तक मजबूर कर देता है। अतः लोगों को सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए और अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग रहना चाहिए। 'इस यात्रा' शीर्षक कविता में मिथकीय प्रयोग की सार्थकता के साथ कवि ने लोगों से लालची प्रवृति के बहिष्कार का आग्रह किया है। कुछ पंक्तियाँ देखिए –

" अंधेरे से इस आलोक की यात्रा में
पार न करना हा एकाकी
नदी वन पर्वत
किसी राजर्षि की सनक पर सवार हो
नहीं लेना है मुझे स्वर्ग
याद है त्रिशंकु का लटकना आज भी।"[12]

इन पंक्तियों के द्वारा कवि बताना चाहता है कि सिफारिश के बल पर मिला मान सम्मान तुच्छ एवं हानिकारक होता है। उन्हें यह ज्ञात है कि अनुनय – विनय के बल पर मिली स्वार्थ- सिद्धि एवं पद – प्रतिष्ठा क्षणिक ही नहीं सपूर्ण विनाश का कारण है जैसे त्रिशंकु की सशरीर स्वर्ग में जाने की लालसा ने औंधे मुंह आकाश से नीचे लटका दिया। यहाँ त्रिशंकु मिथकीय पात्र है, जो काव्यात्मक सौन्दर्य को प्रखरता के साथ पाठकों तक संप्रेषित करता है। 'आयेंगे वे फिर' शीर्षक कविता का मिथकीय प्रयोग बहुरुपिये नेता के दोहरे चरित्र का सार्थक चित्रण किया है –

" मौसमी सवाल लिये
विदुर- घर साग दिन में
रात में दुर्योधन भवन छप्पन भोग लगायेंगे।"[13]

यहाँ नेता के दिखावे का अनोखा मिथकीय चित्र प्रस्तुत किया गया है। जो दिन में गरीबों के घर जाकर अपना स्नेह दिखाते हैं, किन्तु रात्री के अंधेरे में दुर्योधन जैसे दुष्ट लोगों के साथ बैठकी कर छप्पन भोग पाते हैं। साथ ही उन्हीं गरीबों के शोषण का अनेक प्रारूप बनाते हैं। कवि की दृष्टि अत्यंत पारखी, पारदर्शी एवं दूरदर्शी है। उनकी काव्य – रचना समय की विसंगतियों को पहचानती है तथा विसंगतकारों को सचेत भी करती है। 'जिन्दगी' शीर्षक कविता में वे अनाचारियों, दुष्टों, पाखंडियों को सतर्क करते हुए लिखते हैं –

" दशानन दृष्टि में भी रीछ – नर वानर
महज आहार थे
हुआ विपरीत ही संग्राम में
अनाचारी हो अगर भक्षक
उसे आहार ही है, निगल लेता है।"[14]

इन पंक्तियों के द्वारा कवि अन्याय, भ्रष्टाचार एवं पाखण्ड के प्रबल समर्थकों को तल्खी भरे अंदाज में समय रहते सचेत हो जाने की चेतावनी दी है क्योंकि एक दिन वही शोषित -पीड़ित एवं दबे – कुचले जन समूह ही उनका समूल विनाश कर देगा। इसे स्पष्ट करने के लिए उन्होंने रावण जैसे शक्तिशाली मिथकीय पात्र को इन पंक्तियों से सम्बद्ध किया है। कवि कहना चाहता है कि विश्व – विजेता रावण भी मनुष्य और बन्दर को अपना भोजन ही समझता था, किन्तु संग्राम में इसका विपरीत ही हुआ। वही मनुष्य और बंदर के हाथों वह मारा गया। उन्होंने केवल जिन्दगी के खुदुरेपन को ही अपने काव्य का विषय बनाया, ऐसा नहीं है, प्रकृति और पुरुष भी उनकी कविताओं में भ्रमण करते हैं। ये पंक्तियाँ देखिये -

" भ्रमरों का गुंजार

तितलियों का नर्तन है
प्रकृति – रति –ऋतुराज –मदन का
मधुर मिलन है ।"[15]

वसंत ऋतु में प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है, पेड़ – पौधे में नये- नये पत्ते व मंजर लग जाते हैं, क्यारियां फूलों से भर जाती हैं। इस ऋतु में प्रकृति में चौतरफा मधुरता का संचार होता है इसिलिए वसंत को कामदेव का दूत कहा गया है। जहाँ – जहाँ कामदेव जाता है, वहाँ – वहाँ रति जाती है और दोनों का मधुर मिलन अद्भुत वातावरण का निर्माण करता है। रति और वसंत को ही कामदेव की संज्ञा दी है। प्रकृति की इस नवागत चेतना की आनंदानुभूति को महसूस करने के लिए कवि ने रुपक के धरातल पर कामदेव और रति जैसे मिथकीय पात्रों का संयोजन किया है।

रवीन्द्र उपाध्याय समकालीन कवि एवं गीतकार ही नहीं एक सच्चे साहित्य साधक भी हैं। बेवाक अभिव्यक्ति एवं गहन अनुभूति के साथ मिथकीय प्रयोग उनकी रचनाओं को सार्थक, संवेदक, सर्वग्राह्य एवं जीवंत बनाती है। यह इनकी मौलिक कलात्मक क्षमता का परिणाम है। ये जितने बड़े कल्पक हैं, इनकी रचनाए उतने ही यथार्थ – बोध से अनुप्राणित हैं। मिथक इनकी रचनाओं को पंखिल बना देते हैं। जीवन के विविध क्षेत्रों में इनके मिथकीय पात्र अति मानवीय गरिमा के साथ आत्म - शिक्षण की एक सफल एवं कलात्मक पद्धति प्रदान करते हैं। डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय मिथकीय चेतना के बड़े पारखी सर्जक हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. http://abmcollegejamshedpur.ac.in
2. प्रो. वीरेन्द्र आस्तिक, एक नयी सुबह पत्रिका, अंक – 27, माह : जुलाई से सितम्बर 2016, ISSN 2349- 3070, संपादक – डॉ. दशरथ प्रजापति.
3. डॉ. शेखर शंकर मिश्र, एक नयी सुबह पत्रिका, अंक – 27, माह : जुलाई से सितम्बर 2016, ISSN 2349- 3070, संपादक – डॉ. दशरथ प्रजापति.
4. रवीन्द्र उपाध्याय, धूप लिखेंगे छाव लिखेंगे, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रकाशन वर्ष – अगस्त 2000 ई., मूल्य – 70 रुपये, पृष्ठ संख्या – 20.
5. पूनम सिंह, एक नयी सुबह पत्रिका, अंक – 27, माह : जुलाई से सितम्बर 2016, ISSN 2349-3070, संपादक – डॉ. दशरथ प्रजापति.
6. रवीन्द्र उपाध्याय, धूप लिखेंगे छाव लिखेंगे, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रकाशन वर्ष – अगस्त 2000 ई., मूल्य – 70 रुपये, पृष्ठ संख्या – 23.
7. वही, पृष्ठ संख्या - 30.
8. वही, पृष्ठ संख्या - 31.
9. रवीन्द्र उपाध्याय, देखा है उन्हें, अभिधा प्रकाशन मुजफ्फरपुर, प्रकाशन वर्ष – 2019, प्रथम संस्करण, मूल्य – 160 रुपये, पृष्ठ संख्या – 32.
10. वही, पृष्ठ संख्या – 44.
11. वही, पृष्ठ संख्या – 52.
12. वही, पृष्ठ संख्या – 65.
13. वही, पृष्ठ संख्या – 71.
14. वही, पृष्ठ संख्या - 77.
15. रवीन्द्र उपाध्याय, धूप लिखेंगे छाव लिखेंगे, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, प्रकाशन वर्ष – अगस्त 2000 ई., मूल्य – 70 रुपये, पृष्ठ संख्या- 27.

•